महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय , बड़ौदा

पीएच.डी. [हिंदी] उपाधि हेतु प्रस्तुत संक्षिप्त रूपरेखा

[Synopsis]

" मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन"

शोधार्थी

हेम लता

निर्देशक

डॉ. दीपेंद्रसिंह जाडेजा

प्रोफेसर

हिंदी विभाग कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय , बड़ौदा

2022

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध

एक अध्ययन

प्राक्कथन :-

' मूल्य ' बीसवीं शती का एक चर्चित शब्द माना गया है । मूल्यों का विकास समाज के साथ हुआ है। इसे समाज में व्यक्ति की सांस्कृतिक धरोहर स्वीकारा गया है । जिसके आधार पर समाज में प्रत्येक क्रिया- कलाप और व्यवहार होता है।मूल्य मानवीय व्यवहार का नियमन करने वाले ऐसे उच्च आदर्श है ,जिसकी अवधारणा युग और समाज की स्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती चलती है । यह मनुष्य को श्रेष्ठ से श्रेष्ठत्व बनाने का प्रयास है।

मूल्य समाज का आदर्शात्मक प्रतिबिंब है जो मनुष्य को शिष्टाचार बनाते हैं । मूल्य का स्वरूप प्राचीन समय से ही हमारे समाज में व्याप्त रहा है परंतु साधारण मानव इससे परिचित नहीं था। जैसे जैसे व्यक्ति विकसित होता गया वह मूल्य को समझने लगा और धीरे-धीरे मूल्य एक पूर्ण विकास का रूप धारण कर गए । मूल्यों के बिना व्यक्ति का समाज में कोई अस्तित्व नहीं है । मूल्य समाज में मनुष्य की पहचान बनाने में सहायता करता है । मूल्य मनुष्य को समाज के नियमों के बारे में जागरूक करते हैं । समाज में रहते हुए मनुष्य परस्पर प्रेम- भावना , आचार व्यवहार जैसे मूल्यों का प्रयोग करता है । मूल्य मानवीय जीवन को आधार प्रदान करता है।जिसके लिए व्यक्ति और समाज जीवित रहता है तथा ज़रूरत के समय संघर्ष को भी तैयार रहता है । प्रत्येक समाज में कुछ मान्यताएं वह धारणाएं विद्यमान होती हैं । उसमें समय के अनुसार यही मान्यताएं मूल्य बन जाती है। अत: मूल्य मानवीय जीवन में विशेष महत्व रखते हैं । हिंदी नवगीतों में भी मूल्य बोध का अध्ययन किया है । इसके अतिरिक्त अलका सरावगी के कथा साहित्य में मूल्य बोध शोध प्रबंध लिखा गया है । मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्य संबंधित सामग्री का अंकन किया है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 ई. में अलीगढ़ जिले के सिर्कुरा गांव में (उत्तर प्रदेश)विपन्न और निम्न मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था । इनका अपना जीवन व्यक्तित्व और रचना संसार

है । सराहनीय कार्य के लिए कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अगर मूल्य बोध की चर्चा करें तो नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों पक्षों का अध्ययन मिलता है। इनके उपन्यासों का परिवेश शहरी तथा ग्रामीण दोनों तरह का मिलता है । इनकी उपन्यासों में मूल्य विकास तथा मूल्य विघटन के दोनों तरह के तथ्यों का अध्ययन हुआ है । पात्र अपने जीवन में मूल्यों का निर्वाह करते देखे जा सकते हैं । नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताओं का भी वर्णन किया गया है। समाज में मूल्य परिवर्तन को दर्शाया है । विचारधाराओं में बदलाव आ रहा है। मानसिक प्रवृत्तियों में टूटनशीलता को दिखाया है । लेखिका ने अपने उपन्यासों में जीवन की वास्तविकता को इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया है कि उनके उपन्यासों के पात्रों को मस्तिष्क से निकाल पानाकठिन है । इनके उपन्यास के पात्र तथा घटनाएं मूल्य बोध करवाती है। मूल्य बोध का अध्ययन कर अपने उद्देश्य को प्राप्त करना है। शोध प्रबंध की सीमाओं में रहकर पूर्ण करने की संभवत कोशिश की गई है।

शोध विषय के अध्यायों का विभाजन :-

अतः " मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन " शीर्षक से प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण किया गया है । हम अपने शोध प्रबंध के लिए उक्त शोध कार्य को निम्नानुसार विभिन्न अध्यायों में शामिल करते हैं ।

अध्याय 1- मैत्रेयी पुष्पा व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत इनके व्यक्तित्व, साहित्य संसार तथा इनके कथा साहित्य का लघु वर्णन किया गया है । अंत में सम्मान एवं पुरस्कार को वर्णित किया गया है।

अध्याय 2- मूल्य बोध अर्थ , परिभाषा एवं स्वरूप के अंतर्गत मूल्य शब्द का अर्थ , परिभाषा , मूल्य का स्वरूप , मूल्य : समानार्थी शब्द , मूल्य विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से :- समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण , मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण , दार्शनिक दृष्टिकोण , मूल्यों का विभाजन , मूल्य विघटन का अर्थ , परिभाषा एवं स्वरूप , मूल्य विघटन के प्रमुख कारण एवं दिशाएं , मूल्य और साहित्य तथा मूल्य का महत्व एवं प्रासंगिकता शामिल है।

अध्याय 3- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष के अंतर्गत वैयक्तिक मूल्य ,दांपत्यगत मूल्य , पारिवारिक मूल्य ,परंपरागत मूल्य तथा नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं रखी गई हैं ।

अध्याय 4-मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष में अर्थ की जीवन में प्रधानता , आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी , आर्थिक शोषण , आर्थिक संघर्षों का यथार्थ ,बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति , चोरी , डकैती और लूट का अध्ययन किया है ।

अध्याय 5-मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष में पुलिस प्रशासन की क्रूरता , चिकित्सा क्षेत्र में भ्रष्टाचार , राजनीति में चुनावी संघर्ष , धोखाधड़ी तथा बेरोज़गारी का विस्तार से अध्ययन करना है ।

अध्याय 6-मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत , धार्मिक मूल्य बोध में धार्मिक आस्था , सेवाभाव को धर्म समझना , धर्म में अंधविश्वास, सांस्कृतिक मूल्य बोध में लोक गीतों , परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य का विस्तार से अध्ययन किया गया है ।

अध्याय 7- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भाषा शैली का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उपसंहार - समग्र आंकलन एवं निष्कर्ष । इसके अतिरिक्त आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ की सूची का सलंग्न किया गया है । इसके साथ ही प्रकाशित शोध पत्रों की प्रतियों तथा शोध संगोष्ठी या सम्मेलनों में सहभागिता के प्रमाण पत्रों को जोड़ा गया है।

अध्याय 1

मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व निर्माण में उसके पारिवारिक परिवेश , कुल , गोत्र , वंश एवं शैक्षणिक अभ्यास एवं विचारधारा दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। युगीन प्रभावों एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को भी व्यक्तित्व एवं कृतित्व निर्माण में अनदेखा नहीं किया जा सकता है । हिंदी साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा ने अपना अलग ही स्थान बनाया है । इन्होंने हिंदी कथा साहित्य में मौलिकता एवं गुणात्मकता की दृष्टि से असाधारण योगदान दिया है। किसी भी रचनाकार या साहित्यकार के कृतित्व का आंकलन करने से पूर्व उसके व्यक्तित्व को जानना अति आवश्यक है।

1.1 मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व निर्माण

नब्बे के दशक में जिन साहित्यकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और जिन्हें पाठकों ने हाथों-हाथ लिया , उनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम प्रमुख है । मैंत्रेयी पुष्पा का जो व्यक्तित्व बना है , उसका परिचय उनके कथा साहित्य द्वारा प्राप्त होता है । पुष्पा जी ने अपने जीवन में बहुत कष्ट उठाए हैं। इसीलिए इनका व्यक्तित्व दबंग बना।

जन्म और माता - पिता

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 ई. में अलीगढ़ के सिर्कुरा गांव (उत्तर प्रदेश) में हुआ । उनकी माता का नाम कस्तूरी था । इनकी अर्थात कस्तूरी की शादी उनकी मर्जी के खिलाफ रूढ़ी ग्रस्त मर्यादाओं के तहत हीरालाल नाम के व्यक्ति से हुई। मैत्रेयी पुष्पा जब 18 महीने की थी , तभी इनके पिता का देहांत हो गया ।

बचपन और शिक्षा

मैत्रेयी पुष्पा ने बचपन से ही संघर्षमय जीवन बिताया है । वह जाट, यादवों के यहां पली। उसका सारा बचपन बुंदेलखंड में बीता । कस्तूरी नौकरी करने के लिए गांव -गांव जाती थी और मैत्रेयी को परिचितों के सहारे छोड़ती थी । मैत्रेयी ने अपनी आरंभिक शिक्षा झांसी के खिल्ली गांव में ही

प्राप्त की । एम.ए.हिंदी की शिक्षा इन्होने बुंदेलखंड कॉलेज झांसी में पूरी की ।

स्वभाव

मैत्रेयी पुष्पा शुरू से ही स्वभाव में शांत थी। मिलनसार स्वभाव की मैत्रेयी में दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती थी । निडर , सीधी - सीधी तथा अपनी बात स्पष्टता से कहने का साहस मैत्रेयी में है । वह सभ्यता का घूंघट ओढ़कर लोगों से स्तुति नहीं पाना चाहती है बल्कि सच्चाई को न छुपा कर परिस्थितियों का सामना करती है ।

विवाह और परिवार

मैत्रेयी पुष्पा जब बी.ए. में थी , तभी उसने अपनी मां से स्वयं के विवाह की अपील की । मां उसे शिक्षित , स्वावलंबी बनाना चाहती थी । विवाह का विरोध करते हुए कस्तूरी , मैत्रेयी पुष्पा को समझाती है- तू मुझे गलत समझ रही है ।मेरा मतलब यह नहीं कि विवाह बुरी चीज है...यह औरत के लिए ऐसे बंधन पैदा करता है जो जीवन भर कसे रहते हैं । पति के रहने पर भी और न रहने पर भी । पति की पसंद, न पसंद दोनों औरतों पर ही भारी पड़ती है। मैत्रेयी पुष्पा का विवाह डॉ. रमेशचंद्र शर्मा से होता है जिससे उन्होंने तीन बेटियां प्राप्त की। इन्होंने अपनी तीनों बेटियों को डॉक्टर बनाया है । मैत्रेयी पुष्पा के साथ रहते - रहते इनके पति के विचारों में भी परिवर्तन आ गया है ।

पति - पत्नी के संबंध

मैत्रेयी पुष्पा के पति का स्वभाव बहुत सख्त था । मैत्रेयीअपने पति के साथ साथी एवं सखा के रूप में रहना चाहती थी लेकिन हुआ सब इसके विपरीत । मैत्रेयी पुष्पा को पी .एच .डी करने से हर संभव तरीके से रोक दिया जाता है । धीरे-धीरे पति के स्वभाव में बदलाव आता है और मैत्रेयी पुष्पा को उनकी महानता का सबूत मिलता है।

लिखने की प्रेरणा

बचपन से ही मैथिलीशरण गुप्त तथा रामकुमार वर्मा का साहित्य पढ़ते-पढ़ते उनके समानांतर चित्र

उनके आंखों के सामने उभरते जाते थे । बचपन में सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं से प्रेरित होती थी । शादी के लगभग 25 साल बाद लिखना शुरू किया।

अपने लेखन के बारे में उनके अपने विचार

' विज्ञान भूषण ' से हुई मुलाकात में मैत्रेयी पुष्पा ने कहा है कि मैंने हर तरीके के खतरे को झेलतेहुए लिखा है । विवाहिता हुए भी तनी डोरी पर चलते हुए कलम चलाई है। मैत्रेयी पुष्पा साहित्य के माध्यम से स्त्रियों की व्यथा , उनके मन में दबी , कुचली भावना को उजागर करती हैं।

साहित्यकार के रूप में

मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य में कविता से लेखन का कार्य प्रारंभ किया । वह कहानी से होकर सफल उपन्यासकार तक पहुंची । इन्होंने अपने लेखन में ग्रामीण भारत का बखूबी चित्रण किया है। महिला अस्तित्व को एक नई पहचान दी । मैत्रेयी पुष्पा को ' एक बोल्ड महिला ' साहित्यकार कहा जाता है।

1.2 मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य संसार

1.2.1उपन्यास - बेतवा बहती रही , इदन्नमम , चाक , झूलानट , अल्माकबूतरी , अगनपाखी, विज़न , कहीं ईसूरी फाग , त्रियाहठ , गुनाह बेगुनाह , फ़रिश्ते निकले ।

1.2.2 कहानी - चिन्हार , ललमनिया , गोमा हंसती है , पियरी का सपना ।

1.2.3 नाटक - मंदाक्रांता ।

1.2.4 निबंध संग्रह - खुली खिड़कियां , सुनो मालिक सुनो , चर्चा हमारा ।

1.2.5 आत्मकथा - कस्तूरी कुंडल बसै , गुड़िया भीतर गुड़िया।

1.2.6 संस्मरण - फाइटर की डायरी।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का परिचय :-

शोध विषय के लिए उपन्यासों का विस्तारपूर्वक अध्ययन तथा चिंतन किया । इस तरह यहां पर उपन्यासों की विस्तारपूर्वक चर्चा न करके संक्षिप्त रूप में परिचय देना आवश्यक माना है।

बेतवा बहती रही (1993)इस उपन्यास की केंद्रीय पात्र उर्वशी है । उर्वशी नियति एवं व्यवस्था का शिकार बनी समस्त भारतीय नारियों का प्रतिनिधित्व करती है । ग्रामीणों में सुरक्षित जीवन मूल्य और आधुनिकता के प्रभाववश उनमें आ रही गिरावट का समग्र एवं सफल अंकन हुआ है।
इदन्नमम (1994) यह तीन पीढ़ियों के दौरान बदलती मान्यताओं , धारणाओं और मूल्यों का दस्तावेज है । इसमें गांव में हो रहा जन-जागरण , ग्रामीण समस्याओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता, नारी के अंतर्मन की गहरी पहचान आदि का विशेष चित्रण हुआ है।
चाक (1997) यह ब्रज प्रदेश के समकालीन गांव की सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों की यथार्थ पहचान कराता है ।इसमें बदलाव के मोड़ पर खड़े उत्तर भारतीय गांव की विकास प्रक्रिया का चित्र उपस्थित हुआ है।

झूलानट (1999) इस उपन्यास में परित्यक्ता शीलो की कथा है। शीलो ससुराल को न छोड़कर मायके नहीं जाती है । वह नैतिक मूल्यों का वहन करती देखी जा सकती है। इस उपन्यास में वैयक्तिक , पारिवारिक तथा धार्मिक मूल्यों की झलक देखने को मिलती है ।

अल्माकबूतरी(2000) इस उपन्यास में जहां भ्रष्ट व्यवस्था द्वारा मनुष्यता की परिधि से निष्कारित वर्ग समुदाय के जीवन की त्रासदी का सच्चा चिट्ठा खुलता है , वही उनके प्रति हमदर्दी रखने वालों की बहिष्कृत जिंदगी का जीवंत दस्तावेज भी प्रस्तुत करता है। इसमें मानव निर्मित भ्रष्ट व्यवस्था और मानवीय मूल्यों के पतन की झांकी भी मिलती है ।

अगनपाखी (2001) यह उपन्यास पूर्व प्रकाशित उपन्यासिका ' स्मृति दंश ' का पुर्नवीकरण है। इसमें ग्रामीण धरातल का विकृत यथार्थ अर्थ केंद्रित एवं स्वार्थ पर आधारित रिश्ते , रूढ़िवादी ग्राम समाज की कर्मकांड प्रियता एवं सनातनता और मानव धर्म की श्रेष्ठता आदि का अंकन हुआ है ।
विज़न (2002) विवेच्य उपन्यास में चिकित्सा जगत के षड्यंत्रों , उच्च शिक्षा संस्थाओं में प्राप्त भाई -भतीजावाद और बेईमानी , बुद्धिजीवियों के नैतिक अंध: पतन आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है।

कहे ईसुरी फाग (2004) इस उपन्यास में पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर सदियों से किए जाने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया गया है । यह रजऊ जैसी सामान्य स्त्री के साहस , संघर्ष की भी गाथा है ।

त्रियाहठ (2005) यह उपन्यास ' बेतवा बहती रही ' का पुर्नलेखन है । इस उपन्यास में 'बेतवा बहती रही ' के दृश्यों को पलटा है । यहां देवेश अपनी मां के जीवन सत्य को ढूंढने निकल पड़ा है।

गुनाह बेगुनाह(2011)इसमें पुलिस कर्मचारी इला चौधरी की मनोदशा का वर्णन किया गया है। वह देखती है कि लोगों की रक्षा करने वाले पुरुष पुलिस कर्मचारी नारियों का बलात्कार करते हैं । वह यह सब देख कर मन ही मन दुखी होती है।

फ़रिश्ते निकले (2014) इस उपन्यास में बेला बहू का वृतांत लिखा गया है। यह लेखिका का एक नया उपन्यास है । यह वृत्तांत जटिल किंतु कई परतों में बदलते हुए ग्रामीण भारत का दस्तावेज बन गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इनके उपन्यासों में नारी की पीड़ा का वर्णन है ।नारी पीड़ित होते हुए भी मूल्यों का वहन करती है । इसके साथ ही मूल्य विघटन की स्थिति भी उपन्यास साहित्य में देखी जा सकती है।

अध्याय 2

मूल्य बोध अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

जीवन और समाज में मूल्यों की बड़ी महत्ता है । अपने मूल्य आदर्शों से ही किसी भी देश की समाज और उसकी संस्कृति जानी जाती है । शिक्षा की सभी क्रियाएं किसी न किसी रूप में मूल्य से अनुशासित होती हैं । जैसा किसी राष्ट्र का जीवन दर्शन होता है , उसी के अनुरूप वहां मूल्यों की संहिता होती है।

2.1 मूल्य शब्द का अर्थ , परिभाषा

मूल्य शब्द संस्कृत की मूल धातु में 'यत् ' प्रत्यय लगाने से बना है । जिसका अर्थ कीमत , मज़दूरी

आदि होता है । मूल्य शब्द अर्थशास्त्र से आया हुआ माना जाता है । मूल्य शब्द जितना सरल और सहज जान पड़ता है । इस को परिभाषित करना उतना ही कठिन है।

हेमेंद्र कुमार पानेरी के अनुसार, " मूल्य समाज के वे आधार स्तंभ है जिन पर समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का भव्य महल आधारित रहता है।"

अर्थात मूल्यों के द्वारा समाज , व्यक्ति और उसकी संस्कृति का निर्माण होता है । संस्कृति मनुष्य को पारंपरिक जीवन जीने के योग्य बनाती है।

जॉन लेयर्ड के अनुसार ," It (value) is an enquiry to qulites useful or agreeable to ourselves or to others ."

अर्थात यह मूल्य उन गुणों का अन्वेषण है जो स्वयं के लिए या दूसरों के लिए उपयोगी या स्वीकार्य है । इस तरह जॉन लेयर्ड के अनुसार जो गुण कल्याणकारी है , वही मूल्य है।

2.2 मूल्य का स्वरूप

मूल्य का स्वरूप आदर्शात्मक है । मूल्य कभी मिटते नहीं बल्कि यह निरंतर हमारे समाज में प्रवाह मान गति से चलते रहते हैं। समाज में मूल्यों की अहम भूमिका है। इसे मानव के विकास का आधार माना गया है। यह सत्य है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव उनके परिवार का होता है । परिवार में रहते हुए व्यक्ति इन आदर्शात्मक मूल्यों को ग्रहण करता है । युग के अनुरूप मूल्यों में परिवर्तन होता रहता है । इनकी कोई शाश्वत धारणा नहीं है।

2.3 मूल्य : समानार्थी शब्द

पिछले कुछ वर्षों से मूल्य के अनेक समानार्थी शब्द प्रचलन में आ रहे हैं । इन शब्दों में प्रतिमान आदर्श , वर्जनाएं , नैतिकता , पुरुषार्थ , धर्म , संस्कृति और गुण आदि। यह सर्वमान्य तथ्य है कि 'मूल्य' शब्द सर्वप्रथम अर्थशास्त्र के संदर्भ में ही प्रयुक्त हुआ था ।

2.4 मूल्य विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से

साहित्य में प्रयोग से पहले मूल्य की विभिन्न शास्त्रों ने भिन्न-भिन्न दृष्टियों के अनुसार व्याख्या की है :-

1. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

2. अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण

3. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

4. दार्शनिक दृष्टिकोण ।

2.5 मूल्य का विभाजन

विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचारानुसार मूल्यों का विभाजन प्रस्तुत किया है । भारतीय विद्वान गोविंद चंद्र पांडे के अनुसार मूल्य सात प्रकार के हैं :-

1.व्यवहारिक मूल्य 2.आदर्श मूल्य 3.परमार्थिक मूल्य

4.राजनीतिक मूल्य 5.सात्विक मूल्य 6.नैतिक मूल्य

7.सौंदर्यात्मक मूल्य ।

पाश्चात्य विद्वान अर्बन ने मूल्यों के आठ भेद किए हैं :-

1. शारीरिक मूल्य 2.आर्थिक मूल्य 3.मनोरंजनात्मक मूल्य

4. सामाजिक मूल्य 5.चरित्रात्मक मूल्य 6. सौंदर्यात्मक मूल्य

7. बौद्धिक मूल्य 8.धार्मिक मूल्य ।

2.6 मूल्य विघटन का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप

समाज में विभिन्न कारणों की यथा औद्योगिकरण , मशीनीकरण , विदेशी संस्कृति का संपर्क, शिक्षा आदि के कारण परिवर्तन आते हैं । इन परिवर्तनों के फलस्वरुप मानव जीवन भी बदलता है । धारणाएं बदलने लगती हैं ।उससे मूल्यों में तेजी से विघटन आने लगता है ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ," हमारे सामने समाज का आज जो रूप है वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है।"

इस प्रकार नए विचारों और परंपरागत मान्यताओं में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है , जिससे मूल्य विघटन होता है।

2.7 मूल्य विघटन के कारण एवं दिशाएं

मूल्य विघटन के लिए कुछ कारण उत्तरदायी हैं । जिनमें राजनीतिक शक्तियां , सामाजिक , राजनीतिक परिस्थितियां , आर्थिक शक्तियां ,धार्मिक परिस्थितियां , वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैचारिक दृष्टियां आदि हैं।

2.8 मूल्य और साहित्य

समाज के बिना साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती । समाज के जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार साहित्य ही है । मूल्य मनुष्य में ज्ञान और शिक्षा का विकास करता है और साहित्य इस विकास को महत्वपूर्ण बनाता है।

2.9 मूल्य का महत्व एवं प्रासंगिकता

मुल्य समाज विशेष के आदर्श विचारों एवं व्यवहारों के प्रतीक होते हैं । मूल्य ही समाज में विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं का निर्देशन करते हैं । मूल्य सामाजिक नियंत्रण के प्रभावशाली साधन हैं । निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मानव जीवन की सार्थकता मूल्य में निहित है । मूल्यों का सहारा लेकर मनुष्य अपनी इच्छाओं , आदर्शों को प्राप्त करता है।

अध्याय 3

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

बिना समाज के मूल्यों की कल्पना करना असंभव है । सामाजिक मूल्य द्वारा ही व्यक्ति अपना जीवन परिपूर्ण ढंग से जी पाता है। यदि मनुष्य को समाज से अलग कर दिया जाए तो उसमें मनुष्यत्व के गुण लुप्त हो जाएंगे और वह एकमात्र पशु ही माना जाने लगेगा ।" सामाजिक मूल्य एक मानदंड होते हैं जो समाज के प्राणियों की इच्छाओं , संवेदनाओं ,आवश्यकताओं , अभिरुचियों को प्रभावित करते हैं , इसीलिए अनिवार्य रूप से ग्रहणीय हैं।"

3.1 वैयक्तिक मूल्य

वैयक्तिक मूल्यों में व्यक्ति की निजी विचारधाराएं और सामाजिक हित भी शामिल रहता है ।

वैयक्तिक मूल्य व्यक्ति को मानवता का बोध कराते हैं । समाज की प्रतिक्रिया का पहला केंद्र व्यक्ति होता है । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में आत्मसंयम , स्वाभिमान जैसे वैयक्तिक मूल्यों का वर्णन होता है । ' चाक ' शीर्षक उपन्यास में पुरुष पात्र भंवर की मास्टर पद के लिए नियुक्ति होती है । यहां पर एक ही पद पर दो व्यक्तियों को नियुक्त किया जाता है । भवंर की नियुक्ति योग्यता के आधार पर होती है तथा दूसरे व्यक्ति की नियुक्ति सिफ़ारिश के बल पर।इस बात को लेकर भंवर क्रोधित होकर बोलता है- थूकता हूं मैं इस जलालत पर । साली नौकरी है कि आधबटाई ? मातहतों की मातहती ।अपने घर की खेती देखेंगे और इससे दस गुना कमाएंगे । भंवर ऐसी नीति को आदर्श नहीं मानता है । ऐसी नौकरी से उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है । भंवर ऐसी नौकरी की जगह खेती करना अधिक श्रेष्ठ मानता है ।' इदन्नमम 'उपन्यास में कुसुमा भाभी इतनी आत्मसंयमी नारी है कि वह अपने ही घर में सौतन के दुख को झेलती है। उसके पति यशपाल ने उसे बिना किसी वज़ह से त्याग दिया है । कुसुमा भाभी ससुराल को न छोड़कर , वहीं पर सौतन के साथ रहती है ।इस प्रकार यहां पर वैयक्तिक मूल्य के विकास की स्थिति को उजागर किया गया है । सबका अपना जीवन और अपने वैयक्तिक मूल्य हैं ।

3.2 दांपत्यगत मूल्य

भारतीय समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है । स्त्री-पुरुष के बीच प्रगाढ़ प्रेम ही सफल दांपत्य संबंधों का विवेचन करता है । भारतीय मनीषियों द्वारा बताए गए चार आश्रमों में से एक गृहस्थ आश्रम है । मनुष्य के अपने कुछ अधिकार , कर्तव्य , जिम्मेदारियां होती है जो गृहस्थाश्रम के अनुसार दांपत्यगत मूल्य कहे जाते हैं । स्त्री प्राचीन काल से ही इस संस्कार के प्रति निष्ठावान रही है। पति की आज्ञा का पालन करना वह अपना प्रथम कर्तव्य समझती है। यह ऐसा रिश्ता है , प्रतिबद्धता है जो अधिकार और कर्तव्यों के आदान-प्रदान से सफल बनाया जा सकता है।भीष्म साहनी ने ' कड़ियां ' उपन्यास में भी टूटते दांपत्य संबंधों को दिखाया है । यहां पर पति द्वारा पत्नी के साथ न रहने की बात की गई है। पति , पत्नी के साथ न रहने का फैसला करता है।

वह उसके साथ की गई शादी को अपनी जिंदगी की , सबसे बड़ी भूल बताता है।भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास के पात्रों के चरित्र के माध्यम से दांपत्य विच्छेद को दर्शाया है । इसी तरह मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भी ऐसा चित्रण हुआ है । ' विज़न ' उपन्यास में डॉ आभा अपने पति , सास-ससुर के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाती तथा वह उनसे अलग होना चाहती है । आभा , मुकुल से तलाक मांगती है।उपन्यास में लेखिका ने अपनी कथा द्वारा वर्तमान समय के दाम्पत्य सम्बन्धों को भी दिखाया है । वर्तमान में भी दांपत्यगत संबंधों में बदलाव आया है। छोटी-छोटी बातों पर संबंध विच्छेद देखने को मिलता है। आभा , मुकुल के साथ न रहने का फैसला करती है । सफल दांपत्यगत जीवन के लिए प्रेम , विश्वास , समर्पण आदि गुणों की आवश्यकता होती है लेकिन दिन- प्रतिदिन इन सभी गुणों को लुप्त होता देखा जा रहा है। यहां पर दांपत्यगत मूल्य विघटन का चरित्र चित्रण किया गया है।

3.3 पारिवारिक मूल्य

परिवार समाज की अटूट एवं आधारभूत इकाई है। एक ही परिवार में तीन- तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थी । आधुनिक समय में संयुक्त परिवार का महत्व कम हो गया है । अर्थ केंद्रित दृष्टि और व्यस्त जीवन में परिवार पर सबसे बड़ा प्रहार किया है । आज परिस्थितियां बड़ी दुर्गति से बदल रही हैं। व्यक्ति के नैतिक भावों में परिवर्तन हो रहे हैं । जहां यह अनिवार्य और आवश्यक था ,वहीं इसका दुखद पक्ष भी सामने आया है कि आज मूल्यों में परिवर्तन उस दिशा में भी होने लगा है जो मनुष्य को पतन और विकृतियों की ओर ले जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी परिवार का एक ऐसा रूप दिखाया है । जहां पर बाप -बेटे के सम्बधों को देखा जा सकता है ।उपन्यास में मोहन सिंह अपने ही पुत्रअजीत के व्यवहार से हारे हुए दिखाएं हैं । जिस बेटे की पढ़ाई तथा नौकरी के लिए मां-बाप ने अपने गहने बेच दिए , आज वही बेटा अपनी बहन की शादी में खर्च करने से इंकार कर देता है । यहां पर एक बाप अपने ही बेटे से परास्त हुआ है। पारिवारिक मूल्यों में आपसी प्रेम , स्नेह ,करुणा , त्याग , सम्मान आदि की भावना शामिल रहती है । मान- मर्यादा और आदर्श धारणाएं ही सफल

पारिवारिक जीवन की श्रेणी में आते हैं , जो सफल पारिवारिक जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। लेखिका ने परिवार में प्रेम , विश्वास , त्याग और सम्मान की कमी को दिखाया है।

3.4 परंपरागत मूल्य

प्राचीन समय से जो रीति संस्कार चले आ रहे हैं, भारतीय समाज में उन्हें परंपरागत मूल्य के रूप में लिया गया है । परंपरागत मूल्य व्यक्ति को समाज और संस्कृति से संबंधित रखते हैं । यदि संस्कृति में परिवर्तन हुआ तो मूल्य में भी परिवर्तन हो जाते हैं । आधुनिक युग में शिक्षा और विकास के प्रसार के कारण युवा पीढ़ी परंपरागत मान्यताओं और रूढ़ मूल्यों के प्रति विद्रोही बन रही है । वह परंपरागत बन्धन स्वीकार नहीं करना चाहती । यही कारण है कि इन मूल्यों में व्यापक टकराहट की स्थिति उत्पन्न हो रही है लेकिन लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में परंपरागत मूल्य के विघटन तथा विकास दोनों पक्षों को मध्य रखकर चर्चा की है। 'अल्माकबूतरी ' उपन्यास में भी कबूतरा समुदाय में अल्मा को चूड़ियां पहनाते समय अपनी परंपरा का ध्यान रखा जाता है। अल्मा को कांच की चूड़ियां पहनाई जाती हैं , औरतें सोने की चूड़ियां पहनाने से इन्कार करतीं हैं । उनका मानना है कि सुहाग की चूड़ियां कांच की होती हैं। अल्मा को पारंपारिक संस्कृति के अनुसार गहने , कपड़े पहनाए जाते हैं । सभी औरतें अपने परंपरागत मूल्यों को सुरक्षित रखती हैं। यहां पर पात्र अपनी परंपरा से ही अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं । लेखिका के उपन्यास साहित्य के सभी पात्र अपनी परंपरागत मूल्यों के विकास को बढ़ावा देते हैं । भारतीय समाज अपनी परंपरा पालन के कारण ही सभी देशों से अलग पहचान बनाए हुए हैं।

3.5 नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं

21वीं शताब्दी के आधुनिक युग में समाज का नज़रिया नारी के प्रति बदल चुका है। उसकी प्राचीन मान्यताएं और मूल्य बदल चुके हैं । वह वैयक्तिक स्तर पर अहस्तक्षेप्य जिंदगी जीना चाहती हैं। आधुनिक नारी के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्यों में भी बदलाव

आया है । उपन्यास में नारी विधवा होते हुए भी स्वतंत्र मन से जीना चाहती है।वह समाज में स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में है। ' त्रियाहठ ' उपन्यास में भी नारी के बदलते रूप को दिखाया है। गांव में चुनाव है जिसमें गांव की नारी पात्र मामी , प्रधान पद के लिए खड़ी होती है ।पहले ज़माने नहीं रहे कि आदमी औरत को सात पर्दों में छिपाकर रखता था। मामी गांव में घूम - घूमकर अपने चुनावों का प्रचार करती है। गांव में सब लोग बातें करते हैं कि अब पहले वाला समय नहीं रहा । विचारधारा बदल रही है । आज की नारी पुरुष के पीछे घुंघट निकाल कर चलने वाली नहीं है बल्कि पुरुष के साथ प्रत्येक चुनौतियों का सामना करती दिखाई गई है । नारी ने समाज में ऐसा स्थान बना लिया है कि वह प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने को तैयार है।

अध्याय 4

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष

प्रत्येक युग का जीवन आर्थिक मूल्य से अवश्य प्रभावित होता है क्योंकि अर्थ के बिना समाज में जीवनयापन करना असंभव है । समाज का विकास अर्थ पर आधारित है। चार पुरुषार्थ धर्म , अर्थ काम , मोक्ष में अर्थ प्राप्ति को वित्तीय स्थान पर रखा गया है । अर्थ प्राप्ति साधन मूल्य माना गया है। आज के भौतिकवादी दौर में अर्थ व्यक्ति तथा समाज के विकास का मेरुदंड बन गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्यों के आर्थिक पक्ष को चित्रित किया है।

4.1 अर्थ की जीवन में प्रधानता

मुल्य एक आर्थिक अवधारणा होने के कारण इसका संबंध अर्थ से माना गया है । अर्थ जीवन की धुरी है। इसी से सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। समाज का संपूर्ण ढांचा अर्थ व्यवस्था पर ही आधारित है । वर्तमान समय में अर्थ एक आर्थिक मूल्य बन गया है । समाज में विचरण करने के लिए अर्थ अत्यधिक आवश्यक है । ' बेतवा बहती रही ' उपन्यास में पात्र शशिरंजन की बहन का विवाह इसीलिए रुक जाता है क्योंकि वह विवाह में लड़के वालों की मांगों को पूरा नहीं कर पाता है ।शशिरंजन की नई नौकरी लगने के कारण वह इतना पैसा नहीं इकट्ठा कर पाया था कि

लड़के वालों की मांग को पूरी कर सके लेकिन शशिरंजन ने लड़के वालों से विनती की।यहां पर एक भाई ने बहन का रिश्ता बचाने के लिए लड़के वालों से कुछ समय भी मांगा लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने पैसे के खातिर रिश्ता तोड़ दिया।यहां पर व्यक्ति इंसानियत के रिश्ते को भूलकर , अर्थ को प्रधानता देता दिखाया है ।

4.2 आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी

आज के दौर में महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं । चाहे वह स्कूल , कॉलेज , अस्पताल , कारखाने का क्षेत्र हो या खेत खलियान का काम हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ रात - दिन काम कर देश के विकास में सलंगन हैं । देश के आर्थिक विकास में सहयोग दे रही हैं । 'गुनाह बेगुनाह ' उपन्यास में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी का चित्रण हुआ है ।इला चौधरी एक पुलिस कर्मचारी है । जिसने पुलिस में भर्ती होने के लिए अपने मंडप को त्याग दिया था । जब इला घर आती है तो उसकी मां कहती है कि बेटा तूने घर से भाग कर अपनी तकदीर लिख ली थी। यहां पर मां का मानना था कि शादी होने के बाद लड़की एक बांदी बन जाती जैसे कि इला की बहन के साथ हो रहा है। उस समय उसके सभी घर वाले इला के खिलाफ थे लेकिन समय के साथ मां- बाप इला की प्रशंसा करते हैं। उन्हें अपनी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बेटी पर गर्व होता है । यहां पर अर्थ के कारण महिला सम्मान पाती चित्रित की गई है।

4.3 आर्थिक शोषण

अर्थ के लिए समाज में कई वर्गों का जिक्र मिलता है । उच्च वर्ग , निम्न वर्ग का आर्थिक शोषण करते हैं । 'इदन्नमम ' उपन्यास में आर्थिक शोषण की व्यथा कही गई है । जमींदारों द्वारा मजदूरों का शोषण होता है । मज़दूरों का मानना है कि मज़दूरी तो नहीं , बेकार करते हैं काकी। दिन भर छिटकी हुई गिट्टी बीनते रहते हैं बदले में किसी ने दस पैसे हथेली पर रख दिए तो बड़ी बात।मज़दूर मंदा को अपनी व्यथा के बारे में बताते हैं । यहां पर क्रेशर मालिक मज़दूरों की मज़दूरी का भरपूर लाभ लेते हैं । यह सब मज़दूर अनपढ़ है । इन्हें अपने अधिकारों का कोई ज्ञान नहीं है । इन मज़दूरों

में बच्चे ,बड़े सब होते हैं ।इस प्रकार उपन्यास में भी विघटित होते आर्थिक मूल्य को दिखाया गया है।

4.4 आर्थिक संघर्षों का यथार्थ

आज के समय में व्यक्ति की अर्थ के प्रति लालसा दिन- प्रतिदिन बढ़ जाने के कारण इसमें हर प्रकार के संघर्ष जायज़ हो गये हैं। इसने समाज के सभी मूल्यों को दबाकर अर्थात कुचल कर रख दिया है। व्यक्ति द्वारा अर्थ को अत्यधिक महत्व देने के कारण परिवारों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो रही है । यही संघर्ष परिवारिक मूल्यों में विघटन की स्थिति उत्पन्न करते हैं । संबंधों में बदलते मूल्यों के लिए आर्थिक परिवेश ही जिम्मेदार ठहराया जाता है । आर्थिक संघर्षों का यथार्थ मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है।'इदन्नमम ' उपन्यास में क्रेशर का काम करके मज़दूरों को सांस की बीमारी हो गई है । यहां पर मज़दूर अपनी सारी व्यथा मंदा को बताते हैं कि उनका कुछ भी खराब हो जाए लेकिन काम तो करना ही पड़ेगा। अगर ये काम न करें तो इनके बच्चे भूखे मर जाएंगे । धूल में काम करने से उनके फेफड़े खराब हो गए हैं । यह मज़दूर इतनी मेहनत करते हैं लेकिन इन्हें कभी भरपेट खाना नसीब नहीं हुआ । यहां पर मालिकों द्वारा मजदूरों का शोषण किया जाता है। लेखिका ने मज़दूरों के आर्थिक संघर्ष को कथा के माध्यम से आवाज़ दी है।

4.5 बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति

आज समाज में अर्थ के प्रति बढ़ती लालसा ने मनुष्य को अधिक व्यवसायिक बना दिया है। बढ़ती जनसंख्या और महंगाई ने सबसे अधिक आज की युवा पीढ़ी को प्रभावित किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने ' विज़न ' उपन्यास में डॉ. आर.पी .शरण की व्यवसायिक मनोवृति को दिखाया है । घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या ? मेडिसन के विशेषज्ञ यदि मरीज भर्ती न करें तो भूखे मर जाए। डॉ. शरण का आई सेंटर है, जिसमें वह डे -केयर सर्जरी में भी मरीजों को बेड दे देता है ताकि उनसे पैसे वसूले जा सके । जब डॉक्टर नेहा उसे बोलती है कि डे- केयर सर्जरी में इस सब की कोई आवश्य- कता नहीं तो डॉ. शरण अस्पताल के हित के बारे में नेहा को समझाते हैं । वे मरीज के हित को

सामने नहीं रखते हैं। इस तरह उपन्यास में डॉक्टरों की व्यवसायिक मनोवृति से विघटित होते आर्थिक मूल्यों को चित्रित किया गया है। उपन्यास में आर्थिक परिवेश बदलते मूल्यों के लिए जिम्मेदार माना है।

4.6 चोरी , डकैती और लूट

मानव मन की इच्छाएं अनंत होती हैं । अर्थशास्त्र में इच्छाओं को जरूरतें ,आराम तथा ऐशोआराम में विभाजित किया गया है । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में अर्थ अर्थात जरूरतों को पूरा करने के लिए चोरी , डकैती तथा लूट को मार्ग बनाया है। ' अल्माकबूतरी ' उपन्यास में पात्र अपना जीवनयापन चोरी और लूट द्वारा ही करते हैं । इस कबूतरा समुदाय में बच्चे को जन्म लेते ही चोरी की सीख दी जाती है । उपन्यास का एक पात्र जंगलिया बारह वर्ष की अवस्था तक तीन घड़ियां और एक हज़ार रूपया लूट चुका था । इनके समुदाय में चोरी के आधार पर ही लड़के का रिश्ता होता था । अगर लड़के ने छोटी उम्र में ही बहुत बड़ी चोरी को हाथ लगाया है तो लड़के के विवाह का सारा खर्च लड़की का बाप उठाता था । यहां पर चोरी करके लाए गए सामान का कुछ हिस्सा कबीले के मुखिया को दिया जाता था । इस तरह उपन्यास साहित्य में आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते सामाजिक संबंधों को आर्थिक आधारों पर टूटते दिखाया है । आर्थिक मूल्य में टकराहट के कारण कई समस्याएं जन्म लेती हैं।

अध्याय 5

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष

राजनीति सबसे शक्तिशाली शासन व्यवस्था है । राजनीति के अंतर्गत मूल्य स्वत: समाहित हो जाते हैं। राजनीति को व्यक्तियों का सामूहिक चिंतन माना गया है । इसके अंतर्गत बहुत से व्यक्ति एकत्रित होकर राज्य पर विचार -विमर्श करते हैं । सरकार का यह विचार - विमर्श सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का होता है। राजनीति में भ्रष्टता इसमें ह्रास , विनाश की स्थिति का बड़ा

कारण है । इसी कारण राजनीतिक मूल्यों का ह्रास होता है । लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में राजनीतिक मूल्यों का वर्णन किया है ।

5.1 पुलिस प्रशासन की क्रूरता

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में पुलिस व्यवस्था के क्रूर रूप को दिखाया है । जहां पुलिस प्रशासन से जनता को सुरक्षा की अपेक्षा रहती है ताकि कोई अनहोनी घटने पर जनता पुलिस में जाकर न्याय की मांग कर सके । पुलिस का नाम सुनते ही समाज में अपराध प्रवृत्ति के कम होने की आशा लगाई जाती है ।' फ़रिश्ते निकले ' उपन्यास में पुरुष पुलिस कर्मचारियों की राक्षस वृत्ति को दिखाया है । उपन्यास में लोहा बेचने वाली महिलाओं पर पुलिस द्वारा की गई छेड़छाड़ का जिक्र मिलता है । उपन्यास में खड़ग की मां सोमती चिमटा , खुरपी, करछूल , चिमटा बेचने निकली और पुलिस वाले ने छेड़ दी और आपस में बहस करने लगे वे दोनों सिपाही पहले मैं , पहले मैं । उपन्यास में लोहे के औजार बेचने वालों से पुलिस प्रशासन की छेड़छाड़ का वर्णन सामने आता है । पुलिस वाला उपन्यास की पात्र सोमती से भद्दी हरकत करता है । इस तरह उपन्यास में दिखाया है कि आज के समय में जनता अपने पुलिस कर्मियों से भी सुरक्षित नहीं है । आज की न्याय व्यवस्था इतनी भ्रष्ट हो गई है कि किसी से न्याय और सुरक्षा की अपेक्षा नहीं रख सकते हैं । लेखिका ने गिरते राजनीतिक मूल्य का वर्णन किया है। राजनीतिक मूल्य विघटन से नैतिक मूल्य भी पतन के रास्ते पर आ गए हैं।

5.2 चिकित्सा क्षेत्र में भ्रष्टाचार

जब से प्रशासन तंत्र का उदय हुआ है , उसी समय से भ्रष्टाचार का जन्म भी हुआ है । उपन्यास साहित्य में यह भ्रष्टाचार चिकित्सा क्षेत्र में देखने को मिलता है । यहां पर भ्रष्टाचार अर्थ की बढ़ती लालसा के कारण हो रहा है। व्यक्ति अधिक से अधिक धन एकत्रित करने के लिए इस राजनीतिक बुराई की चपेट में आ रहा है । ' विज़न ' उपन्यास में चिकित्सक अधिकारी अधिक से अधिक धन कमाने के लिए भ्रष्टाचार करते देखे गए हैं । उपन्यास में मरीज दो सालों से अस्पताल के चक्कर

लगाते हैं लेकिन बारी आने पर लेंस को खत्म हुआ बता देते हैं । यहां पर लेंस भी अधिक दाम में बेचे जाते हैं । मरीज़ परेशान होकर अधिक दाम में भी लेंस लेने को तैयार हैं । उनका मानना है कि हर स्थान पर भ्रष्टाचार है और इस स्थान पर भी भ्रष्टाचार झेलने को तैयार हैं।

5.3 राजनीति में चुनावी संघर्ष

राजनीति का बोलबाला आदिकाल से ही साहित्य में हो रहा है। पल-पल बदलती हुई राजनीति ने साहित्य में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी । भारतीय शासन प्रणाली में जनता द्वारा प्रतिनिधि का चुनाव होता है । आज के समय में चुनावों की राजनीति एक संघर्ष बन गई है। जिसका वर्णन लेखिका ने ' त्रियाहठ ' उपन्यास में किया है। उपन्यास में चुनावों के दौरान ऐसा वातावरण बन गया है कि मानों विवाह हो। प्रत्येक उम्मीदवार अपनी-अपनी तरह से जनता को खुश करने में लगा हुआ है। लोगों को अपनी तरफ करने के लिए उनकी मनपसंद चीज़ें बांटी जा रही हैं।मामा , मीरा को चुनावों के बारे में बताते हैं । मीरा मामी के साथ वोट मांगने के लिए आई है । चुनाव जीतने के लिए न जाने कितने रुपय पर रूपए लगा दिए हैं और शराब से लोगों की खातिरदारी की जाती है । लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से वर्तमान युग की राजनीति में चुनावों के संघर्ष को दिखाया है। आज की राजनीति में व्यक्ति को महत्व न देकर उसके सेवा पानी पर ध्यान दिया जाता है। कहने का भाव है कि आज की राजनीति भी पैसों की राजनीति हो गई है । आम अर्थात गरीब व्यक्ति चुनाव लड़ने की सोच भी नहीं सकता।

5.4 धोखाधड़ी

भ्रष्ट आचरण द्वारा सामाजिक व्यवस्था में जो बुराइयां आई है उसे धोखाधड़ी का नाम दिया गया है। धोखे द्वारा धारण किया गया आचार- विचार चरित्र का विरोधी होता है। आज के समय में जब कोई व्यक्ति अपना कार्य करवाने के लिए अनुचित ढंगों का प्रयोग करता है तो उसे धोखाधड़ी कहते हैं। यह शब्द भ्रष्ट आचरण , भ्रष्ट व्यवहार का प्रतीक होता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को विभिन्न रूपों में मुखर किया है । ' चाक 'उपन्यास में गांव का प्रधान

स्कूल बिल्डिंग की फर्जी ग्राटं को हड़पना चाहता है। प्रधान के साथ इस धोखाधड़ी में गांव के कुछ लोग भी शामिल हैं तथा वे चाहते हैं कि स्कूल का मास्टर श्रीधर भी इसमें शामिल हो लेकिन श्रीधर स्कूल में चल रही धोखाधड़ी का पर्दाफाश करना चाहता है । जिसमें दूसरे अध्यापक न आकर प्रधान के बेटे को तीन सौ महीने पर रखा होता है ताकि वह फर्जी हस्ताक्षर कर दे। श्रीधर को यह पता चलने पर वह भड़क जाता है। ऐसे भ्रष्ट व्यक्ति ही राजनीतिक मूल्यों को विघटन के मार्ग पर पहुंचाते हैं।

5.5 बेरोज़गारी

लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में बेरोज़गारी को राजनीति का मुद्दा बनाकर वर्णन किया है। बेरोज़गारी में व्यक्ति आर्थिक रूप से संपन्न नहीं होता। आर्थिक संपन्नता से ही व्यक्ति अपनी गरीबी को दूर कर सकता है । ' बेतवा बहती रही ' उपन्यास में पात्र की बेरोज़गारी को व्यक्त किया है। उपन्यास का पात्र अजीत पढ़ लिख गया है लेकिन उसके सामने रोज़गार की समस्या खड़ी हो गई है जिसके कारण रंजीत को नौकरी लगने के लिए अपने मां बाप से पैसे मांगने पड़ते हैं ताकि वह विभाग में पैसे देकर नौकरी प्राप्त कर सके। इस तरह उपन्यास में पढ़ - लिख कर भी युवक के सामने नौकरी कीबहुत बड़ी समस्या बन कर आई है। व्यक्ति अपने रोजगार के लिए राजनीति के घेरे में इस कदर आ गया है कि चाहकर भी उससे निकल नहीं सकता है। वर्तमान समय में भी युवा रोज़गार के लिए भटक रहा है। अतः कहा जा सकता है कि उपन्यास में पात्रअधिकतर राजनीति में धन की लालसा के लिए आते हैं । अर्थ की अंधी दौड़ में शामिल होकर इंसानियत और मानवीयता मूल्यों का क्षरण करते देखे जा सकते हैं।

अध्याय 6

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

धर्म जगत का सार है । जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति भिन्न-भिन्न पड़ावों में धार्मिक मान्यताओं को मानता है । धर्म वह मूल्य है जिससे प्रेरित होकर मनुष्य यह विचार करता है कि वह दूसरों के अधि-

कारों का अतिक्रमण न करें । भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है जिसके अनुसार भारत का कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म को अपना सकता है तथा उसे त्याग सकता है।

6.1 धार्मिक मूल्य

धार्मिक मूल्य धर्म की रक्षा के लिए बनाए गए आचरण के मानदंड है। इसके अंतर्गत ईश्वरीय सत्ता में आस्था , विशिष्ट धर्मानुसार विधि अनुष्ठानों की व्यवस्था , अपने धर्मानुसार व्रत आदि के मानदंड मूल्य आते हैं । मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में धर्म से संबंधित मूल्यों की चर्चा की है। धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वास और कर्मकांडों की एक संगठित व्यवस्था है जो उन व्यक्तियों को एकल नैतिक समुदाय में बांधता है जो इसका अनुसरण करते हैं।

6.1.1 धार्मिक आस्था

लेखिका के उपन्यास साहित्य में पात्र अपने जीवन में ईश्वरीय आस्था के अनुसार ही जीवन व्यतीत करते दिखाए गए हैं। ' इदन्नमम 'उपन्यास में मंदा तथा मकरंद का रिश्ता तय होता है। जिसमें सभी शगुन किए जाते हैं । मंदा तथा मकरंद के लिए बऊ अर्थात मंदा की दादी भगवान से उन दोनों के सुखमय भविष्य की कामना करती है । उपन्यास में बऊ की धार्मिक आस्था को दिखाया है। बऊ ने जो घी का दीपक जलाया है ,उसी की तरह मंदा तथा मकरंद के जीवन में भी उजाला रहने की भगवान से प्रार्थना करती हैं। बऊ अपने जीवन में धार्मिक मूल्यों को विकसित करती दिखाई देती है । इस तरह भारत में किसी भी धर्म से संबंधित व्यक्ति हो , वह अपने धर्म में पूर्ण विश्वास और निष्ठा करता है । बऊ को जीवन में संकटों से लड़ने तथा दृढ़ बनने के लिए मंदा रामचरितमानस के दोहे सुनाती है । इसके अतिरिक्त लेखिका ने उपन्यास में धर्म के उस रूप को भी दिखाया है जो कि व्यक्ति को अन्याय के विरुद्ध लड़ना सिखाता है। इस तरह धर्म का जीवन में महत्व व्यक्ति को अत्याचारों से बचाता हुआ भी दिखाया गया है। इस तरह उपन्यास में धार्मिक मूल्य विकास के लिए प्रयास करते पात्रों का चित्रण किया गया है।

6.1.2 सेवाभाव को धर्म समझना

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में पात्र बड़े बुजुर्गों की सेवा करना अपना धर्म मानते हैं । उपन्यास ' झूलानट ' में परंपरागत धार्मिक मूल्य का निर्वाह होता दिखाया गया है। उपन्यास की पात्र शीलो उसके पति सुमेर द्वारा शादी के तुरंत बाद त्याग दी जाती है। जिसके पीछे कारण शीलो का कुरूप होना था। परित्यक्ता शीलो द्वारा अपने मायके में न जाकर ससुराल में सास की सेवा करने का विवरण मिलता है । शीलो ससुराल में खेती कर लेगी लेकिन मायके नहीं जाएगी। शीलो सास की सेवा में ही अपना सर्व सुख समझती है । शीलो ने अपने दिल को पत्थर बना लिया है ,उसने अपने दिल में पति के प्रेम के लिए कोई जगह नहीं रखी , परंतु वह सास की सेवा करना चाहती है।उप-न्यास में दिखाया है कि सेवा सबसे बड़ा धर्म है। शीलो ससुराल में नौकरों की हैसियत से रहने को अपना धर्म मान लेती है । इस प्रकार शीलो में बड़ों के प्रति प्रेम , सहानुभूति है। यहां पर रामायण की पात्र उर्मिला के समान ही शीलो का चरित्र दिखाया गया है। जिस तरह उर्मिला ने चौदह वर्षों तक सास की सेवा की थी और पति लक्ष्मण वनवास में थे । यहां पर धार्मिक मूल्य सेवाभाव को शीलो के माध्यम से विकसित होता दिखाया है।

6.1.3 धर्म में अंधविश्वास

धर्म एक सर्वव्यापक धारणा है, जिसमें विभिन्न देवी- देवताओं की पूजा- विधि शामिल रहती है तथा साथ ही अन्य कर्मकांड भी होते हैं । उपन्यास साहित्य में लोगों के धर्म से संबंधित अंधविश्वासों की चर्चा की गई है । भूत प्रेतों से संबंधित तथ्य सामने आते हैं ।' चाक 'उपन्यास में सारंग अपने बेटे को शहर में पढ़ने को भेजती है । वह शहर जाने से पहले चंदन की नज़र उतारती देखी गई है। सारंग अपनी मुट्ठी में राई , नौन और मिर्च ले आई , चलती बेला लपक कर बेटे की बराबरी में पहुंची तथा सात बार उतारा और पिछवाड़े को मुट्ठी उछाल दी। सारंग ने चंदन को बुरी शक्तियों से बचाने के लिए यह उपाय किया । ऐसा अंधविश्वास वर्तमान समय में भी प्रचलित है। कई बार बच्चा अधिक रोता है या बीमार हो जाता है , तो माना जाता है कि उसे किसी बुरी शक्ति या व्यक्ति की बुरी नज़र लग गई है। जिसे दूर करने के लिए बच्चे के ऊपर से भी ऐसे टोने - टोटके किए जाते हैं ।ऐसा

करने से असर भी होता देखा गया है , तभी तो लोगों की ऐसी मान्यताओं पर गूढ़ निष्ठा बन गई है। यह अंधविश्वास लोगों के द्वारा स्वयं बनाए गए हैं।

6.2 सांस्कृतिक मूल्य

मानव के जीवन मूल्यों का संबंध संस्कृति से होता है और सभ्यता के साथ जीवन मूल्यों का संबंध संस्कृति द्वारा ही संभव है।संस्कृति स्वयं को साहित्य सामाजिक संस्थाओं और व्यवहारों आदि द्वारा संवारती है । सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति हमारे विचारों और व्यवहारों से होती है । उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक मूल्य से संबंधित तथ्यों का वर्णन लेखिका ने किया है।

6.2.1 लोक गीत

लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में विशेष क्षेत्रों से संबंधित लोक गीतों का वर्णन किया है। । लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य मे विभिन्न रीति-रिवाजों से संबंधित लोक गीत भी गाए हैं। यह लोकगीत बुंदेली तथा ब्रज क्षेत्रों से संबंधित देखे गए हैं। लोकगीतों में विवाह से संबंधित अनेक रस्मों को अदा करते हुए गीत गाए हुए दिखाए गए हैं। उपन्यास में वीर कथा से संबंधित सुआटा जैसा लोक गीत भी गाया जाता है। उपन्यास में लोकगीतों का स्वर परस्पर गूजंता है , जिसमें वहां की संस्कृति भी दृष्टिगोचर होती है। लोकगीतों में किसी को उलाहना भी हो सकता है तथा भगवान की वंदना भी। इसके अतिरिक्त संयोग तथा वियोग दोनों रसों का सामंजस्य दिखलाया है ।'कहीं ईसुरी फाग ' उपन्यास में विवाहिता रज्जो गांव में आए ईसुरी फगवारे से प्रेम करती है तथा छिपकर दोनों एक - दूसरे से मिलते हैं । रज्जो ने इसुरी के लिए फाग गायी है।

राते परदेसी संग सोई
छोड़ गऔ निरमोही
असुआ ढरक परे गालन पै जुबन भीज गए दोई
गोरे तन की चोली भिजी दो-दो बार में निचोई
ईसुरी परी सेज के ऊपर , हिलक हिलक मैं रोई ।

6.2.2 परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में परंपरा से चले आ रहे सांस्कृतिक मूल्यों का वर्णन किया है । जिसमें पात्रों के रहन - सहन , पहरावा , पर्व तथा त्योहारों आदि का विवेचन किया गया है । प्रत्येक प्रांत या क्षेत्र की अपनी वेशभूषा होती है। ' फ़रिश्ते निकले ' उपन्यास में उजाला लोहा पीटा ओं की लड़की है जो कि घाघरा ओढनी पहनती है । इनका यही रिवाज़ है । उजाला का दोस्त वीर उसके लिए एक पोशाक उपहार में देता है ।इस उपहार में सलवार कमीज होती है लेकिन उजाला इस पोशाक को पहनने से मना करती है क्योंकि घागरा ओढनी ही उसका रिवाज़ है।यहां पर उजाला का वाक्य परंपरागत पोशाक की चर्चा करता है । वह अपने ही पहनावे को अच्छा मानती है तथा यहां पर परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य का परिचय मिलता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति को अपने समाज से या संस्कृति से जोड़ने का कार्य करते हैं। यह व्यक्ति को सभ्य , सुसंस्कृत बनाते हैं । लेखिका के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य ऐसे समाज का निर्माण करना है , जहां हम अपनी संस्कृति को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करें । तभी भारतीय लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रह सकते हैं । लोकगीत समाज के क्षेत्रों की संस्कृति को व्यक्त करते दिखाए गए हैं।

अध्याय 7

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भाषा - शैली

किसी भी कृति को श्रेष्ठत्व प्रदान करने के लिए भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। भाषा के अभाव में उत्कृष्ट से उत्कृष्ट रचनाकार के भाव लिखित होकर भी अस्पष्ट अथवा अपूर्ण रहेंगे। भाषा मनो- भावों की व्यंजना है । साहित्यकार का भाषा पर जितना अधिकार होगा , भावाभिव्यक्ति उतने ही सफल ढंग से होगी । मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में बुंदेलखंड तथा ब्रजभाषा का अधिकतर प्रभाव देखने को मिलता है । इनके उपन्यासों की भाषा सीधी- सीधी प्रभावपूर्ण है । इन्होंने स्थानीय भाषा का प्रयोग करके अपने साहित्य को विशिष्टता प्रदान की है। साहित्य की दृष्टि

से संपन्न मानी जाने वाली ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

बुंदेलखंडी शब्द , अंग्रेजी शब्द

लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में डूकरो , मोड़ी , बेडिनी , पिरेम आदि शब्दों से बुंदेलखंडी बोली की रंगत को समझाया है । ठठरीबंदा , घाटकरी आदि शब्द गालीवाचक है । अंग्रेजी शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग किया गया है । कॉन्फ्रेंस , कॉस्मेटिक , गाइनेकोलॉजी , प्रैक्टिकल , रिजेक्ट आदि। आगरा हैज इट्स ओन कल्चर इट्स ओन वर्ड ऑफ ऑप्थल्मॉलाजी । दिस वर्ड हैज इट्स ओन एथिक्स।

लोकोक्तियां और मुहावरे

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में लोकोक्तियां तथा मुहावरों का दिल खोलकर प्रयोग किया है । जिसके कारण कथ्य को कम शब्दों में सारगर्भित एवं प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है ।

1.मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी

2.जैसा देश वैसा भेष

3.नौ सौ मूसे खाए बिल्इया हज्ज को चली

4.मुंह तोड़ जवाब देना

5.जंगल में मंगल होना

6.मोम सा पिघलना।

पुनरुक्त शब्द , सूक्तियां

लेखिका ने उपन्यासों में कभी-कभी वाक्य में एक ही शब्द को दो बार प्रयोग किया है । जिससे कार्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है । छपाक- छपाक , दूर-दूर , अपने-अपने , नरम- नरम , तिनका- तिनका , खेल -खेल आदि ।

सूक्ति जीवन का अनुकूल सत्य है। लेखिका ने अपने जीवनगत निष्कर्षों को सूक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है ।

1.रोग में रुचि तो पैसा जगाता है

2.मौन से बड़ा कोई तप नहीं

3.बिना पैसा सब सून ।

शैली

मैत्रेयी पुष्पा ने समाज के यथार्थ को दर्शाने के लिए एकाधिक शैलियों का प्रयोग किया है । वर्णना-त्मक शैली , चित्रात्मक शैली ,व्यंग्यात्मक शैली , नाट्य शैली , प्रश्नात्मक शैली , पत्रात्मक शैली , पूर्व दीप्ति शैली , संवाद शैली , एकालापी शैली , कथात्मक शैली तथा टेलीफोन संवाद शैली का प्रयोग देखने को मिला है।

उपसंहार

मूल्य व्यक्ति की रक्षा के लिए मानदंड होते हैं । मूल्य व्यक्ति को समाज के नियमों के बारे में जागरूक करते हैं । समाज में रहकर व्यक्ति परस्पर प्रेम -भावना , आचार- व्यवहार जैसे मूल्यों का प्रयोग करता है। मूल्य व्यक्ति को मानवीय जीवन का आधार प्रदान करते हैं। मूल्यों का आदर्शो के साथ निकट का संबंध है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में मूल्य बोध के अंतर्गत मूल्य विकास तथा विघटन का वर्णन किया गया है । साहित्य जीवन मूल्यों की उपलब्धि का सशक्त आधार हैं। सामाजिक मूल्य में बनते, बिगड़ते दांपत्य संबंधों को दिखाया है । कुछ पात्र अपनी इच्छाओं को मारकर सामाजिक हित के लिए भी कार्य करते हैं । उपन्यास में विघटित होते पारिवारिक मूल्य में अपने , अपनों का साथ छोड़ देते हैं तथा प्रेम के कारण पड़ोसी सहायता करते दिखाई देते हैं । लेखिका ने समाज में मूल्यों के बदलते स्वरूप को दिखाया है । उपन्यास में नारी गुलामी को स्वीकार नहीं करती है । आधुनिक नारी के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्यों में भी परिवर्तन

आया है । आर्थिक पक्ष में नारी आत्मनिर्भर है । आत्मनिर्भरता के कारण उपन्यास की नारी पात्र समाज में प्रशंसा पाते दिखाई दी है । आत्मनिर्भर नारी किसी दूसरे के दबाव को सहन नहीं करती है । पात्र इतना अर्थ केंद्रित हो गया है कि वह अपने सामाजिक संबंधों को भूल गया है । उपन्यास में पात्र अपने रिश्तो को पैसे के बल पर भूलते दिखाया है । एक भाई , दूसरे भाई के हिस्से की जमीन के लिए मौत के घाट उतार देता है । इस तरह उपन्यास में आर्थिक तथा सामाजिक मूल्य विघटित होते हैं । लेखिका ने अपने उपन्यासों के पात्रों के माध्यम से वर्तमान समय में हो रहे आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है । मज़दूरों को अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए भी धन नहीं मिलता है । पूंजीपति वर्ग की मानसिकता व्यवसायिक बन गई है । यह निम्न वर्ग को कुचलने में लगा है । अर्थ की अंधी दौड़ ने मानवीय मूल्यों का क्षरण किया है । साथ ही पद लोलुपता तथा स्वार्थ के कारण भ्रष्टाचार जैसे दुष्कर रूप राजनीति के सामने आए हैं । पढ़ - लिख कर पात्र नौकरी के लिए भी पैसे लगाता दिखाया है । जिससे बेरोजगारी जैसे तत्व सामने आए हैं । पात्रों में धार्मिक मूल्यों को विकसित करने की लालसा है । पात्रों में अपने भगवान पर पूर्ण विश्वास है , वह अपने जीवन का प्रत्येक कार्य प्रभु के नाम से ही आरंभ करते हैं । सास - ससुर की सेवा को बहु अपना धर्म मानती है ।लोग परंपरा से निभाते आए टोने- टोटके में भी विश्वास करते हैं। उनके अनुसार ऐसा करना अपने धार्मिक मूल्यों को विकसित करना है । अपनी संस्कृति के प्रसार के लिए लोक-गीत गाते हैं। लोगों के पहनावे , उत्सव से उनकी संस्कृति का परिचय मिलता है। लेखिका के उपन्यासों में संस्कृति का वर्णन करने का उद्देश्य अपनी परंपरागत संस्कृति को सर्वोत्तम बनाना है ताकि भारतीय लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रह सके। इस तरह उपन्यासों में मूल्य विकास तथा विघटन दोनों ही रूप देखने को मिलते हैं । वर्तमान समय में भी ऐसा ही दृश्य देखने को मिलता है कि कुछ लोग अपने संस्कारों का पालन करके मूल्य विकास को बढ़ावा देते हैं तथा कुछ अपने समाज के बाहर जाकर परिस्थितियों के अनुसार स्वयं भी परिवर्तित हो जाते हैं । जिस कारण मूल्य विघटन के दृश्य दिखाई देते हैं ।

शोध प्रबंध में प्रयोग की गई शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध प्रबंध में वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है । लेखिका के उपन्यास साहित्य को पढ़कर मूल्य बोध विषय को विस्तार दिया है। विवेच्य शोध प्रबंध में विषय या समस्या के संबंध में वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करके उसके आधार पर वर्णन किया गया है । कथा को सम्मुख रखकर मूल्य विकास तथा मूल्य विघटन तथ्यों को विस्तारपूर्वक वर्णित किया है।

शोध प्रबंध की स्थापनाएं :-

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य के पात्र वैयक्तिक मूल्य के द्वारा समाज में बदलाव लाना चाहते हैं । वैयक्तिक मूल्य में सामाजिक हित को सम्मुख रखा गया है ।

2. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में विघटित तथा प्रसारित होते दांपत्यगत तथा पारिवारिक मूल्यों को चित्रित किया है । ऐसा नहीं है कि मूल्य टूट ही रहे हैं , टूटने के साथ विकसित भी होते देखे गए हैं।

3. मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में परंपरागत मूल्यों का पालन किया गया है।

4.नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं साहस ,चेतना के दर्शन होते हैं।

5. अर्थ से आत्मनिर्भर नारी के सम्मान का चित्रण हुआ है।

6.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित उच्च जातियों, पूंजीपति एवं उच्च वर्ग से , निम्न वर्ग आतंकित एवं शोषित है ।

7.उपन्यास के पात्रों को अपने क्षेत्र से प्रेम है । वह अपने अनगढता , सीधापन छोड़ना नहीं चाहते।

8. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सरकारी कार्यालयों में आसीन व्यक्ति के भ्रष्ट व्यवहार का वर्णन हुआ है । राजनेताओं की मान्यता को भी दिखाया है ।

9 . उपन्यास के पात्रों की भगवान पर अटूट आस्था को चित्रित किया है।

10.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में बड़े बुजुर्गों का आदर, मान- मर्यादा , परोपकार , सहृदयता जैसे आदर्श मूल्यों का समर्थन किया है ।

11.लोकगीतों के प्रयोग द्वारा सांस्कृतिक मूल्य बोध करवाया है ।

12.मैत्रेयी पुष्पा के समग्र उपन्यास साहित्य में लोकोक्तियां तथा मुहावरों आदि का प्रयोग हुआ है।

13. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्थानीय बोली एवं आंचलिक भाषा का प्रयोग प्रसंगानुरूप है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रंथ :-

1. बेतवा बहती रही , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली, 2018

2.इदन्नमम ,राजकमल प्रकाशन :नई दिल्ली ,2016

3.चाक , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

4.झूलानट , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2012

5.अल्माकबूतरी , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

6.अगनपाखी , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2014

7.विज़न , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008

8.कहीं ईसुरी फाग , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली, 2018

9.त्रियाहट , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली , 2011

10..गुनाह बेगुनाह राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली 2014

11.फ़रिश्ते निकले , राजकमल प्रकाशन :नई दिल्ली ,2016

सहायक ग्रंथ :-

1. खान वसीम अहमद , सामान्य मनोविज्ञान , डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस : नई दिल्ली ,2010

2.त्रिपाठी शशिकला , उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री , विश्वविद्यालय प्रकाशन : वाराणसी , 2017

3.जलील अब्दुल , समकालीन हिंदी उपन्यास समय और संवेदना , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2006

4. पुष्पा मैत्रेयी ,गुड़िया भीतर गुड़िया , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008

5.पुष्पा मैत्रेयी , कस्तूरी कुंडल बसै , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2002

6. पुष्पा मैत्रेयी , चर्चा हमारा , सामयिक प्रकाशन : नई दिल्ली ,2011
7. पुष्पा मैत्रेयी , सुनो मालिक सुनो , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली ,2006
8.पुष्पा मैत्रेयी , खुली खिड़कियां , सामयिक प्रकाशन : नई दिल्ली , 2005
10.सिहंल बैजनाथ , नयी कविता : मूल्य मीमांसा , मंथन पब्लिकेशन :रोहतक , 1981
11.देवराज , संस्कृति का दार्शनिक विवेचन , हिंदी समिति : उत्तर प्रदेश , 1972
12.पांडे गोविंदचंद्र , मूल्य में मीमांसा ,राका प्रकाशन : इलाहाबाद , 2005
13.राजपाल हुकमचंद , समकालीन कविता में मानव मूल्य , शारदा प्रकाशन : दिल्ली , 1993
14.पानेरी हेमेंद्र कुमार , स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास मूल्य संक्रमण , संधी प्रकाशन : जयपुर , 1974
15.भारती धर्मवीर , मानव मूल्य और साहित्य, मंत्री प्रकाशन : वाराणसी , 1968
16.रजनी कु. , निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य : मूल्यपरक अध्ययन , आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स : दिल्ली , 2014
17.देशमुख रमेश , आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य , विद्या प्रकाशन :मेरठ , 1991
18.सारस्वत ओमप्रकाश , बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक , मंथन पब्लिकेशन : रोहतक , 1983
19.नगेंद्र , भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका , नेशनल पब्लिशिंग हाउस: दिल्ली , 1974
20.लवानिया रमेशचंद्र , हिंदी कहानी में जीवन मूल्य , अमित प्रकाशन : गाजियाबाद , 1973
21.गुप्ता कमलेश , कविता और मूल्य संक्रमण , प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली , 1985
22.मेघ रमेश कुंतल , सौंदर्यमूल्य और मूल्यांकन , गुरु नानक यूनिवर्सिटी : अमृतसर , 1975
23.शर्मा मोहिनी , हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य , साहित्यगार प्रकाशन : जयपुर , 1986
24.गुप्त जगदीश , नयी कविता : स्वरूप और समस्याएं , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन :दिल्ली, 1971

25'गुंजन' शर्मा गिरिराज , हिंदी नाटक : मूल्य संक्रमण , संधी प्रकाशन : जयपुर , 1978
26.बणकर धीरजभाई , कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ , ज्ञान प्रकाशन: कानपुर , 2010
27.किशोर नवल , मानववाद और साहित्य , राधाकृष्ण प्रकाशन : दिल्ली , 2003
28.सेठी हरीश , जीवन मूल्य और विमर्श , संजय प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008
29.भट्ट गौरीशंकर ,भारत में समाजशास्त्र प्रजाति और संस्कृति , साहित्य भवन लिमिटेड: इलाहाबाद , 1952
30.गुप्ता ममता , धर्मगाथा और जातीय संघर्ष , राधारानी प्रकाशन: दिल्ली , 1998
31.' पथिक ' शर्मा देवराज , हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा : एक समग्र अनुशीलन , इंद्रप्रस्थ प्रकाशन : दिल्ली , 1980
32.तिवारी रामजी , हिंदी समीक्षा में काव्य मूल , अतुल प्रकाशन : कानपुर , 1986
33.सिहं शंभूनाथ , व्यक्ति और सृष्टा , लोकभारती प्रकाशन: इलाहाबाद , 1968
34.कुमार आनंद , समाजशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाएं , विवेक प्रकाशन : दिल्ली , 1990
35.शर्मा सुकेश , भारतीय संस्कृति में मानव मूल्य और लोक कल्याण , सजंय प्रकाशन: नई दिल्ली , 2008
36.शर्मा वासुदेव , हिंदी कहानी में मूल्यों की तलाश , सहयोग प्रकाशन : दिल्ली , 1990
37. भारद्वाज राहुल , नवे दशक की हिंदी कहानी में मूल्य विघटन , जवाहर पुस्तकालय: मथुरा , 1999
38.कौशिक हेमराज , अमृतलाल नागर के उपन्यास नए मूल्यों की तलाश , प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली , 1984
39.सरावगी अलका , जानकीदास , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2015
40.शर्मा नासिरा , अक्षयवट , भारतीय ज्ञानपीठ : नई दिल्ली , 2003

41.शर्मा नासिरा , ठीकरी की मंगनी , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली , 2019

42.तोमर रामबिहारी सिहं , समाजशास्त्र की रूपरेखा , पोरवाल प्रिंटिंग प्रेस : आगरा , 1970

43. सागर शैलेंद्र , ब्रंच तथा अन्य कहानियां , किताबघर प्रकाशन: नई दिल्ली , 2014

44.सिहं शिवप्रसाद , वैश्वानर , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2004

45.जावड़ेकर आचार्य श.द., आधुनिक भारत ,कॉन्टिनेंटल पब्लिकेशन : अटलांटिक , 2000

46.उपाध्याय निलय , पहाड़ , राधाकृष्ण प्रकाशन : नई दिल्ली , 2015

47.बाबर सुरेश , भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन , अन्नपूर्णा प्रकाशन : कानपुर , 2001

48. साहनी भीष्म , कड़ियां , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

अंग्रेजी ग्रंथ सूची :-

1.W.M.Urban , Fundamental Of Ethics , George Allen and Unwin , London ,1930

2.Krober , Culture , Harvard University ,Combridge ,1952

3.Dr.Radhakamal Mukherjee , The Social Structures of Values , S.Chanel and Co. New Delhi ,1965.

शब्दकोश सूची :-

1. आप्टे शिवराम , संस्कृति हिंदी कोश , मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली , 1977

2.वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश परिभाषिक शब्दावली , ज्ञानमंडल लिमिटेड , वाराणसी , 1985

3.वर्मा रामचंद्र , मानक हिंदी कोश , हिंदी साहित्य सम्मेलन , प्रयाग , 1966

विश्वकोश :-

1.इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

पत्रिकाएं :-

1. राजेंद्र यादव , हंस , नई दिल्ली , अप्रैल 1998

2.वीरेंद्र यादव , हंस , नई दिल्ली , अगस्त 2002

3.विजय बहादुर सिंह , उत्तर प्रदेश , जनवरी-मार्च 2007

4.सूर्य प्रसाद दीक्षित , नई दिल्ली ,चाणक्य , मई 2009

अन्य माध्यम :-

1.इंटरनेट

2.समाचार पत्र ।